Indian J. Soc. & Pol. 05(01):137-139:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत की सुरक्षा चिन्ताएंः बदलते नेपाल के परिप्रेक्ष्य में

अनिल कुमार गुप्ता[1a]

[a]सीनियर रिसर्च फेलो, राजनीतिशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

नेपाल, भारत का सामरिक रुप से महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है। दोनों देशों के मध्य सदियों से चले आ रहे ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक व आर्थिक सम्बन्ध विश्व में अपने आप में विशिष्ट है जो अन्यत्र कहीं और देखने को नहीं मिलता है। नेपाल के उत्तर में स्थित तिब्बत पर जब से चीन का प्रभुत्व स्थापित हो गया, तब से नेपाल की स्थिति भारत के लिए पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हो गयी है। भारत और नेपाल के मध्य रिश्ते सामान्य होने पर कोई विवाद नहीं होता है परन्तु जैसे ही नेपाल में राजनैतिक उतार–चढ़ाव होता है, तो नई दिल्ली तथा काठमाण्डू के बीच पुराने विवाद विस्फोटक संकट का रुप ग्रहण कर लेते है। इन्हीं परिस्थितियों का लाभ उठाकर भारत विरोधी शक्तियां यथा–चीन तथा पाकिस्तान वहां सक्रिय होकर भारत की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती उत्पन्न करने लगते हैं। प्रस्तुत लेख में नेपाल की तरफ से भारत की सुरक्षा के लिए चुनौती उत्पन्न करने वाले कारकों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

***KEY WORDS:** राष्ट्रीय सुरक्षा, मधेशी, सन्धि, राष्ट्रीय हित, मुक्त पारगमन, राजनीतिक अस्थिरता।*

प्रस्तावनाः

नेपाल की पहचान संसार में एकमात्र हिन्दू राज्य के रुप में की जाती है। यह एक स्थलरुद्ध देश है। भारत और चीन दो एशियाई दिग्गज देशों के साथ इसकी सीमाएँ मिलती हैं। तीन तरफ पूर्व, पश्चिम एवं दक्षिण में भारत से तथा उत्तर में चीन के स्वायत्त प्रान्त तिब्बत से घिरे नेपाल को भारत तथा चीन के मध्य एक 'बफर राज्य' माना जाता है। भारत के 5 राज्य सिक्किम, पं0 बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड नेपाल के साथ 1751 किमी0 लम्बी सीमा बनाते है।

विश्व में भारत–नेपाल जैसा अद्वितीय सम्बन्ध अन्यत्र कहीं और देखने को नहीं मिलता है। सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर दोनों देशों में इतनी अधिक समानता है कि दोनों के बीच राजनैतिक विभाजन कठिन हो जाता है। इसलिए कहा जाता है कि भारत–नेपाल सम्बन्ध अपने किसी महत्व से ज्यादा भूगोल व इतिहास से निर्धारित होता है। दोनों देश न केवल खुला बार्डर साझा करते हैं, बल्कि लोगों का भी आबाधित आवागमन होता है, दोनों तरफ के लोग परिवार व शादी के द्वारा भावनात्मक रुप से भी जुड़े हैं। इन्हीं सम्बन्धों की विशिष्टता को इंगित करते हुए पुष्पेश पंत कहते है कि ''सीमावर्ती इलाके में रहने वाले भारतीय और नेपाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को बाधा या रुकावट के रुप में नहीं देखते, न केवल यहाँ के गाँवों–कस्बों के निवासियों के बीच रोटी–बेटी का सम्बन्ध है सढ़ियों से बल्कि आर्थिक जीवन के ताने–बाने भी आपस में गुंथे हुए हैं।''(पंत,2010पृ022)

भारत और नेपाल के मध्य ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक सम्बन्धों की शुरुआत सदियों पहले हो चुकी थी, परन्तु राजनीतिक सम्बन्धों की स्थापना हम 1950 से मान सकते है, जब दोनों देश 31 जुलाई, 1950 को **'भारत–नेपाल शान्ति और मैत्री सन्धि'** पर हस्ताक्षर किये। इस सन्धि के माध्यम से भारत यह चाहता था कि दोनों देशों के मध्य समानता के आधार पर सम्बन्ध स्थापित किये जायें। अतः इस संधि में निम्नलिखित प्रावधान किये गये–

1. दोनों देश किसी विदेशी आक्रमण या उसकी सुरक्षा के लिए उत्पन्न संकट को सहन नहीं करेगा।

2. अपने प्राचीन सम्बन्धों के आधार पर दोनों देश चिरकालीन शान्ति एवं मैत्री बनाये रखेंगे तथा परस्पर संप्रभुता, अखण्डता एवं स्वतंत्रता को पूर्ण सम्मान देंगे।

3. सामान्य रुप से नेपाल अपने प्रयोग के लिए युद्ध–सामग्री भारत से खरीदेगा तथा किसी अन्य देश से युद्ध–सामग्री खरीदने से पूर्व वह, भारत से परामर्श करेगा।

4. तिब्बत, नेपाल और भूटान के मध्य के दर्रों पर निगरानी रखने के लिए भारतीय और नेपाली सेनाएं संयुक्त रुप से तैनात की जायेगी।

5. नेपाली नागरिकों को भारत में नागरिकों का दर्जा दिया जायेगा।

6. दोनों देशों के नागरिकों को मुक्त आवागमन की सुविधा प्रदान की जायेगी।

इसी सन्धि के अनुसार दोनों देशों के सम्बन्ध बेहद मैत्रीपूर्ण ढंग से संचालित होते रहें हैं। इसी संधि का लाभ उठाकर ''आज लगभग 6 लाख भारतीय नेपाल में रह रहे हैं, जिनमें बिजनेसमैन, डॉक्टर, इंजीनियर, आई0टी0 विशेषज्ञ और श्रमिक

1: Corresponding Author

सम्मिलित है।''(Retrived from www.mea.gov.in/Portal/Foreign Relation/India_Nepal_Relations_11_04_2017.pdf) जो निश्चित रुप से नेपाल की राजनीति को प्रभावित करते हैं। इस सन्धि से न केवल भारत को, अपितु नेपाल को अत्यधिक लाभ हो रहा है। भारत में नेपाली लोगों की संख्या लगभग 6 से 8 लाख है। ''दोनों देशों के मध्य गहरे विश्वास व मित्रता को हम दो तथ्यों से परख सकते हैं–पहला नेपाल का दो–तिहाई वैश्विक व्यापार भारत के साथ है तथा दूसरा उसका 90% आयात–निर्यात भी भारत से ही होता है।''(वर्ल्ड फोकस,दिस02017 पृ076)

परन्तु नेपाल को वर्तमान में इस सन्धि पर आपत्ति है और वह लगातार इसे रद्द की मांग भी कर रहा है। नेपाल का मानना है कि चूंकि यह सन्धि 1950 में हुयी थी जब नेपाल में राजतंत्रात्मक शासन था, परन्तु वर्तमान में वह संप्रभु, लोकतांत्रिक, गणतांत्रिक, पंथनिरपेक्ष और समाजवादी हो चुका है। इसके अलावां नेपाल एक भूमि आबद्ध देश है, परन्तु इस सन्धि ने नेपाल को भारत आबद्ध (India Locked) कर दिया है। इसके अतिरिक्त नेपाल द्वारा भारत के अलावां किसी और देश से युद्ध सामग्री खरीदने से पूर्व भारत से परामर्श करना नेपाली संप्रभुता के विरुद्ध है। इन्हीं आपत्तियों को आधार बनाकर आज नेपाल में भारत विरोधी जनमत का निर्माण किया जा रहा है।

मधेशी समस्याः

नेपाल में पहाड़ी तथा तराई क्षेत्रों के मध्य क्षेत्र को ही मधेशी क्षेत्र कहा जाता है। यह क्षेत्र भारत की सीमा से लगा हुआ है। अतः मधेशी क्षेत्रों की समस्या का प्रभाव भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों पर पड़ना स्वाभाविक है। इस मधेशी क्षेत्र में नेपाल के 22 जिले शामिल है। इन मधेशियों में भारतीय मूल के मधेशी भी सम्मिलित हैं। चूंकि ये मधेशी मैथिली, भोजपुरी एवं हिन्दी भाषा का प्रयोग करते है, अतः इनके सांस्कृतिक एवं वैवाहिक सम्बन्ध भारतीयों के साथ सदियों से चले आ रहे हैं। यही मधेशी लोग नये संविधान में अपने लिए दो अलग राज्य की मांग कर रहे हैं, जिसका नाम मिथिलांचल और जनकपुर होगा। किन्तु सितम्बर, 2015 में लागू होने वाले नये संविधान में उनके प्रतिनिधित्व की उपेक्षा की गयी, जिससे उनके नृजातीय संघवाद की मांग पूरी नहीं हो पायी। इसका कारण था कि नेपाल के संविधान में निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन भौगोलिक आधार पर किया गया, जिससे संविधान का झुकाव उनकी तुलना में पहाड़ी क्षेत्र के प्रबुद्ध वर्ग की ओर हो गया।

चूंकि नेपाल विगत दो दशकों से राजनीतिक उथल–पुथल के दौर से गुजर रहा था। इससे पहले उसे माओवादी हिंसा का सामना करना पड़ा, जिससे तकरीबन 20000 लोगों को जान गवांनी पड़ी। उसके बाद लम्बी राजनीतिक उठा–पठक चली। फिर 2015 में आये भूकम्प ने वहां भारी तबाही मचायी, जिससे सम्पत्ति के साथ मनोवैज्ञानिक नुकसान भी हुआ। यह उम्मीद की जा रही थी कि नये संविधान के अमल में आने के बाद वहां स्थिरता आयेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। नये संविधान के लागू होते ही वहां विरोध प्रदर्शन शुरु हो गये। मधेशी समूहों ने भारत–नेपाल सीमा को बंद कर दिया, जिससे वहां भूकम्प से प्रभावित क्षेत्रों में आवश्यक वस्तुओं यथा–दवा, ईंधन, भोजन सामग्री आदि की आपूर्ति बंद हो गयी। इस नाकेबंदी के लिए माओवादियों ने भारत को जिम्मेदार माना। माओवादी पहले से ही मधेशियों को भारत समर्थक मानते आ रहे है। इसलिए माओवादी तथा मधेशियों के बीच कई बार हिंसक संघर्ष भी हो चुका है। मधेशियों के भारी विरोध प्रदर्शन को देखते हुए नेपाल सरकार ने जनवरी, 2016 में पहला संविधान संशोधन किया और जनसंख्या के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन की व्यवस्था की गयी।

मधेशी आंदोलन भले ही औपचारिक रुप से समाप्त हो गया हो, किन्तु उसका दूरगामी परिणाम भारत पर पड़ना स्वाभाविक है। दोनों देशों के मध्य मुक्त आवागमन के प्रावधान के परिणाम स्वरुप भारत में आने वाले नेपाली– प्रवासियों की संख्या में वृद्धि होगी। नेपाल की अस्थिरता का लाभ उठाकर भारत विरोधी राज्य भारत की सुरक्षा के विरुद्ध कार्य करेंगे। इसके अलावां मुक्त आवागमन का लाभ उठाकर अनेक आतंकी संगठन भारतीय सीमा में सरलता से प्रवेश कर जाते हैं। सबसे जरुरी बात कि नेपाल का झुकाव लगातार चीन की ओर बढ़ रहा है जो भारतीय सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है।

सुरक्षा चिंताएं

नेपाल भारत के लिए खुले तौर पर सुरक्षा सम्बन्धी कोई खतरा पैदा नहीं कर सकता है, लेकिन वहां चीन व पाकिस्तान की मौजूदगी भारत की सुरक्षा सम्बन्धी चिंता का कारण जरुर है। दोनों देशों के मध्य मुक्त सीमा का प्रावधान होने के कारण भारत–नेपाल सीमा पर पार–राष्ट्रीय अपराध लगातार बढ़ रहे है। भारत में आतंकवादी एवं आपराधिक घटना को अंजाम देने वाले तत्व नेपाल में प्रवेश कर जाते है। नशीली दवाओं का अवैध व्यापार, नकली नोट तथा मानव–दुर्व्यापार भारत–नेपाल सीमा से होते रहे हैं जो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नवीन खतरें हैं।

नेपाल में माओवादी उग्रवाद हमेशा से ही भारत की सुरक्षा के लिए चिंता का कारण रहा है। दोनों देशों के माओवादी उग्रवादियों के बीच बढ़ता सम्बन्ध दोनों देशों के सम्बन्धों पर हमेशा से ही प्रभाव डालता रहा है। इतना ही नहीं मधेशी समस्या, जो नेपाल की आन्तरिक समस्या है, भी दोनों देशों के रिश्तों को सामान्य नहीं होने देता है।

नेपाल में पाकिस्तान खुफियां एजेन्सी आई0एस0आई0 की संदिग्ध गतिविधियां लगातार बढ़ रही है। ''आई0एस0आई0 द्वारा खुफिया ऑपरेशन के लिए नेपाल की सीमा प्रयोग किया जाता रहा है। हाल के वर्षों में नेपाल भी आतंकवादियों के लिए एक सुरक्षित स्थल माना जा रहा है।''(भल्ला,2016 पृ0121) इसका कारण है कि

यहां हथियारों की खरीद–फरोख्य बहुत ही आसानी से हो जाता है। इसके अतिरिक्त नेपाल की चीन से बढ़ती नजदीकी भारत की सुरक्षा चिंता को बढ़ा रहा है। नेपाल की अस्थिरता का लाभ उठाकर चीन हमेशा ही वहां भारत–विरोध को आधार बनाकर अपने पक्ष में जनमत का निर्माण करता रहा है। दुर्भाग्यवश नेपाल की माओवादी सरकार भी भारत विरोध के आधार पर ही वहां राष्ट्रवाद का खोखला पोषण करती आ रही है।

नेपाल में चीन की बढ़ती गतिविधि

नेपाल और चीन के बीच राजनयिक सम्बन्ध 1956 में स्थापित हुए। तब से लेकर अब तक चीन ने नेपाल को अपनी ओर आकर्षित करने का लगभग हर सम्भव प्रयास किया और आज इस दिशा में वह सफलता भी प्राप्त कर चुका है। इसका स्पष्ट प्रमाण है नेपाल की विदेश नीति में चीन की ओर स्पष्ट झुकाव। अभी तक नेपाल में भारत से ही निवेश होता आ रहा है, लेकिन हाल के वर्षों में वहाँ की राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर चीन अब नेपाल में बड़ी परियोजनाओं में निवेश बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। दुर्भाग्यवश नेपाल में 2015 में आये भूकंप के दौरान मधेशियों द्वारा आर्थिक नाकेबंदी ने चीन को एक अच्छा मौका दे दिया। इस दौरान चीन ने नेपाल को पारगमन के नवीन रास्ते उपलब्ध कराये। इसी के तहत दोनों देशों के बीच सात सीमा व्यापार मार्ग खोलने पर सहमति बनी। नेपाल के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए भी चीन ने अपने पत्तन की सुविधा उपलब्ध कराने की घोषणा की। इसी दौरान अक्टूबर 2015 में नेपाल सरकार ने पेट्रोलियम आयात करने के लिए चीन से करार किया। इन सबके के अतिरिक्त ''चीन ने नेपाल सरकार से तिब्बत की राजधानी ल्हासा से काठमांडू तक रेल लाइन बिछाने का समझौता भी कर लिया है।''(दैनिक जागरण, 19 सित0 2016)

जहाँ तक चीन नेपाल के ढांचागत संरचना में निवेश कर रहा है, तो इससे भारत को कोई समस्या नहीं है। नेपाल की सामरिक स्थिति होने के कारण उसे दोनों देशों से ही लाभ उठाने की स्वतंत्रता है। किंतु नेपाल और चीन के बीच सैनिक सम्बंधों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है जो भारत की सुरक्षा के लिए जरूर चिंता का विषय है। ''दिसम्बर, 2016 में चीन ने नेपाल के साथ अपने पहले संयुक्त सेनाभ्यास की घोषणा की, जिसे नेपाल ने स्वीकार भी कर लिया। यह भारत–नेपाल शान्ति एवं मैत्री सन्धि, 1950 का खुले तौर पर उलंघन था। क्योंकि ऐसा करने से पहले नेपाल को भारत को सूचित या उससे परामर्श करना चाहिए था।''(http://thediplomat.com/2017/01/India-and-china-tug-of-war-over-Nepal/)

नेपाल का एक धड़ा (माओवादी) भारत को हमेशा से ही एक साम्राज्यवादी देश कहते रहे हैं। चीन ने भी सदैव इसी स्थिति का लाभ उठाकर नेपाल में भारत की भूमिका इस तरह पेश किया कि भारत नेपाल के सबसे बड़ा सुरक्षा खतरा है। इसी को आधार बनाकर चीन व वहाँ के माओवादियों ने भारत विरोध को आम जनता तक पहुंचा दिया। इस प्रकार यह मानने में कोई गुरेज नहीं है कि नेपाल द्वारा चीन के साथ सुदृढ़ सम्बंधों का विकास नेपाल के राष्ट्रीय हितों के मुकाबले भारत को प्रतिसंतुलित करने की भावना से ज्यादा प्रेरित है।

लेकिन पिछले कुछ महीनों से भारत–नेपाल के सम्बंधों में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। कहा जाये तो भारत द्वारा नई दिल्ली और काठमांडू के मध्य कूटनीतिक सम्बंध बनाने के बजाय सुविधा प्रदायक बनाने की कोशिश की जा रही है। इसकी शुरूआत भारतीय प्रधानमंत्री ने 26 मई, 2014 की अपनी नेपाल यात्रा से शुरू की थी। नवम्बर, 2016 में भारतीय राष्ट्रपति के नेपाल यात्रा के दौरान यह बयान आया कि '' भारत नेपाल का संबंध परिवार की तरह है। भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से निकटता ही नहीं, नेपाल–भारत के लोगों में देश की गुंजाइश ही कहां है।''(दैनिक जागरण, 7नवं02016)

निष्कर्ष

वैश्वीकरण के इस युग में किसी भी देश का विश्व व्यवस्था से अलग रहना उसके राष्ट्रीय के लिए उचित नहीं है और न ही वह देश अन्य देशों के सहयोग के बिना नित नई चुनौतियों का सामना कर सकता है। यही बात नेपाल पर भी लागू होता है। इसके अलावा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में पड़ोसी का कोई विकल्प नहीं होता है, इसे भी नेपाल और भारत दोनों को समझना होगा। नेपाल को यह भी समझना होगा कि ''चीन उसके ढांचागत संरचना में चाहे जितना निवेश कर ले, किन्तु वह भूगोल की ज्यादतियों को नहीं बदल सकता।' किसी भी प्राकृतिक आपदा के समय चीन से कहीं ज्यादा त्वरित सहायता नई दिल्ली ही काठमांडू को पहुंचा सकता है। भारत भी अपने पड़ोसी देशों के साथ साझेदारी व सहयोग के द्वारा ही अपनी अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के साथ, राष्ट्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकता है।

संदर्भ

Bhalla, D.(2016), *Strategic Singnificane of North-East India*, IMR media pvt.Ltd.

http://thediplomat.com/2017/01/India-and-china-tug-of-war-over-Nepal/

पंत, पुष्पेश,(2010) *भारत की विदेश नीति,* नई दिल्ली, टाटा मैक्ग्रा हिल ऐजुकेशन प्रा0 लि0

दैनिक जागरण, सितम्बर, 19, 2016

World Focus, Dec. 2017, Page-76.

www. mea.gov.in/Portal/Foreign Relation/India_Nepal_Relations_ 11_04_2017.Pdf.